आर्थिक कारण - औपनिवेशिक शासन द्वारा लागू नवीन भू राजस्व प्रणाली (स्थायी बंदोबस्त) ने किसानों का भू स्वामित्व समाप्त कर दिया तथा अधिकतम लगान देने पर बाध्य किया। हस्तकला एवं दस्तकारों की बर्बादी।

राजनीतिक असंतोष - देशी रियासतों के प्रति हड़प नीति से असंतोष व्याप्त था।
पलामू के अंतिम चेरो शासक चूड़ामन राय को कथित कर वसूली के नाम पर गद्दी से उतार दिया गया।
जमींदारों और जागीरदारों से अंग्रेजों की अधिकतम माँग ने उन्हें आर्थिक तंगी की हालत में ला दिया।

सामाजिक-धार्मिक कारण - बहाबियों को समर्थन देने के कारण सरकार मुस्लिम मौलवियों का शोषण कर रही थी वहीं जनजातीय क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों को जनजातियों के धर्मांतरण हेतु प्रोत्साहित कर रही थी।
1829 के सती प्रथा उन्मूलन तथा 1856 के हिंदू उत्तराधिकार कानून से रूढ़िवादियों में रोष व्याप्त था।

सैनिक कारण — भारतीय सैनिकों से दोयम व्यवहार। बिहार के देवघर जिले (वर्तमान झारखंड) के स्थल सेना की टुकड़ी ने रोहिणी ग्राम में विद्रोह कर दिया।

असफलता के कारण — (i) विद्रोह का सीमित क्षेत्र में प्रसार
(ii) शासन को जमींदारों का साथ - सरकार के हथुआ राज के जमींदार ने कुँवर की जब्त सम्पत्ति का एक हिस्सा लिया।
(iii) रसदों का अभाव
(iv) योग्य नेतृत्व का अभाव